श्रीराम मंदीर की संघर्ष गाथा - हिंदी पोवाडा

प्रभू श्रीराम जी को नमन । ऋषी मुणी जन । करता हू वंदन ।
अयोध्या भूमी पावन धाम ।
जन्मे वहां पुर्षोत्तम श्रीराम ।
बोलो सारे जय जय जय श्रीराम ।।जी।।

ध्वज लहराओ घर घर पर । तिलक माथे पर । गाओ सभ मिलकर ।
सियावर रामचंद्र की जय।
पवनसुत हनुमान की जय ।
बोलो रे भाई हिंदू धर्म की जय ॥ जी ॥

दशरथ कौशल्यानंदन । सिता, लक्ष्मण । दास हनुमान । किया पावन ।
भारत भूमी की पावन धाम ।
अयोध्या नगरी मे निर्माण ।
रामजी के मंदिर का उत्थान ॥ जी ॥

गद्य -

अयोध्या के पावन भूमी पर प्रभू श्री राम जी जनम हुआ... सारी सृष्टि मे आनंद की वर्षा बरसने लगी...
देवगण भी हर्शोल्लासित हुए... प्रभू श्रीरामजीने मानवी अवतार धारण करके निती ओर धर्म की राह बनायी...

लेकीन कई सालो बाद ईसी भारतभूमीपर परकियो का आक्रमण हुआ ओर बाबर नाम के राजा ने हिन्दुओ के शिवालय ओर मंदिर तोडकर मस्जिद बनवायी,

ओर यही जुररत उसने राम लल्ला के मंदीर के साथ भी की....
अयोध्या के पावन राम जन्मभूमी पर मंदिर तोडकर वहा बाबरी मस्जिद बनवायी....

राम लल्ला के भूमी पर ।मंदिर हटाकर ।बनाई वहा पर ।
बाबरी मस्जिद खडी भारी ।
अधर्मसे सत्ता चली सारी ।
अन्याय की करदी हद्दपारी ॥जी ॥

गद्य -
लेकीन यह बात हिन्दुओं को पल्ले न पडी, ओर हमारे हिंदू कार सेवकोने अयोध्या मे घुसकर बाबरी मस्जिद पर हातोडा डाला ओर मस्जिद का ढाचा तोडकर वहापे
भगवा ध्वज लहरा दिया...

अनिती मस्जिद बाबरी । तोडकर सारी । नीव भरी भारी ।
किया मंदिर को पूनरस्थापण ।
दिया अनेकोनो रक्त समर्पण ।
लेहराया भगवा ध्वज नूतन ।
रामजी को किया मंदिर अर्पण ॥जी ॥

गद्य
दो हजार चोबीस, बाईस जनवरी को प्रभू श्रीराम लल्ला के मंदिर का लोकार्पण समारोह, अयोध्या के पावन भूमी पर हो रहा है ।
इस शुभ अवसर पर प्रभु श्रीराम मंदीर की संघर्ष गाथा यह सर्वप्रथम हिंदी पोवाडा प्रभू श्रीरामजी के चरनोपर अर्पण कर रहे है ।

मंदीर की हुई निर्मिती । जीसकी बडी ख्याती । ऋषी वर्णिती ।
आसंदी बिराजे लल्ला श्रीराम ।
सीतामा, लक्ष्मण, दास हनुमान ।
विश्व में हिंदभू की यह शान ।
आ गये धरतीपर भगवान ॥ जी ॥

श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम...
जय श्रीराम...

श्रीराम धर्मनायक । पराक्रमी एक । उत्तमोनेक । विश्वनायक ।
दिया हमे एक राह का पाठ ।
दिया हमे सदाचारी का बाट ।
दिया हमे मानवता का थाट ।
रघुनंदन की गाथा का पूर्ण हुआ यह पाठ ॥ जी ॥

जय श्रीराम...

जयजयकार प्रभु रामजी का । कोसल्या नंदन का । विश्वरूपा का ।
हर हर महादेव की जय ।
जय जगदंब अंब की जय ।
सनातनी हिंदू धर्म की जय ।
मंगल नंदना दास निर्भय ।
जनविश्व की सदाही जय ॥ जी ॥

रचनाकार
प्रा.शाहीर अजिंक्य सुरेश लिंगायत